जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

ISSN 2454-4450

मूल्य ₹ 60

हंस

जनवरी 2025

संपादक
संजय सहाय
•
प्रबंध निदेशक
रचना यादव
•
व्यवस्थापक/सह-संपादन सहयोग
वीना उनियाल
•
संपादन सहयोग
शोभा अक्षर
माने मकर्तच्यान(अवैतनिक)
•
प्रसार एवं लेखा प्रबंधक
हारिस महमूद
•
शब्द-संयोजन एवं रूपांकन
प्रेमचंद गौतम
•
ग्राफिक्स
साद अहमद
•
कार्यालय सहायक
किशन कुमार, दुर्गा प्रसाद
•
मुख्य प्रतिनिधि (उ.प्र.)
राजेन्द्र प्रसाद जायसवाल

कार्यालय
अक्षर प्रकाशन प्रा. लि.
4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-2
व्हाट्सऐप : 9717239112, 9560685114
दूरभाष : 011-41050047
ईमेल : editorhans@gmail.com
वेबसाइट : www.hanshindimagazine.in

मूल्य : 60 रुपए प्रति
वार्षिक : 700 रुपए (व्यक्तिगत)
रजिस्टर्ड : 1100 रुपए
संस्था/पुस्तकालय : 900 रुपए (संस्थागत)
रजिस्टर्ड : 1300 रुपए
विदेशों में : 80 डॉलर
सारे भुगतान मनीऑर्डर/चैक/बैंक ड्राफ्ट द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा. लि. (Akshar Prakashan Pvt. Ltd.) के नाम से किए जाएं.

हंस/अक्षर प्रकाशन प्रा.लि. से संबंधित सभी विवादास्पद मामले केवल दिल्ली न्यायालय के अधीन होंगे. अंक में प्रकाशित सामग्री के पुनर्प्रकाशन के लिए लिखित अनुमति अनिवार्य है. हंस में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं. उनसे हंस की सहमति अनिवार्य नहीं है. साथ ही उनके मौलिक या अप्रकाशित होने का उत्तरदायित्व संपादक और प्रकाशक का नहीं है बल्कि यह दायित्व रचनाकार का है.

प्रकाशक/मुद्रक : **रचना यादव खन्ना** द्वारा अक्षर प्रकाशन प्रा.लि., 4229/1, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित एवं चार दिशाएं, जी-39/40, सेक्टर-3, नोएडा- 201301 (उ.प्र.) से मुद्रित. संपादक–संजय सहाय.

जनवरी, 2025

मूल संस्थापक : **प्रेमचंद : 1930**
पुनर्संस्थापक : **राजेन्द्र यादव : 1986**

पूर्णांक-459 वर्ष : 39 अंक : 6 जनवरी 2025

आवरण : स्वाति बरनवाल

जनचेतना का प्रगतिशील कथा-मासिक

इस अंक में

संपादकीय
4. पॉलिटिकली इनकरेक्ट : संजय सहाय

अपना मोर्चा
6. पत्र

न हन्यते
10. एक स्नेहबंध : ताल, लय और दिल का : राजेन्द्र गंगानी

मुड़-मुड़ के देख
12. कोशिश : उर्मिला शिरीष ('हंस', दिसंबर 1986)

कहानियां
20. संगीन जुर्म : शैलेन्द्र सागर
30. गुस्ताख : श्यौराज सिंह 'बेचैन'
34. जूतियां : जया जादवानी
40. झुरझुरी : प्रकृति करगेती
50. निगरानी : सेइचो मात्सुमोतो (जापानी कहानी) (अनुवाद : अनुश्री प्रकाश)

कविताएं
48. सत्येन्द्र कुमार, राधेश्याम तिवारी, जय प्रकाश पांडेय 'पहाड़ी'
49. देवेश पथ सारिया

साक्षात्कार
60. चार स्त्री कलाकार : (अशोक वाजपेयी से पीयूष दईया की बातचीत)

लघुकथा
81. महावीर राजी

ग़ज़ल
11. अब्दुल कलाम 72. सत्यशील राम त्रिपाठी
87. शंभू शरण मंडल

परख
67. समय की सिलवटें दिखाती कहानियां : प्रदीप कान्त
71. क्या देश बदल रहा है? : पंकज चतुर्वेदी
73. समय के बदलावों की शिनाख्त : प्रज्ञा
76. काल्पनिक पत्रों में चित्रित सामाजिक यथार्थः अभिनंदन
78. जेलों की जिंदगी और क्रूर व्यवस्था की दास्तानः संजीव ठाकुर
82. मानवीय संवेदनाओं को झकझोरती कहानियांः विजय कुमार तिवारी
85. निष्ठुर समय में संवेदनाओं की थाह : प्रभु शर्मा

साहित्यनामा
88. सृजन परिक्रमा : वर्ष 2024 : साधना अग्रवाल

रेतघड़ी
94

पॉलिटिकली इनकरेक्ट

2024 भी बीत गया. संवैधानिक मूल्यों के मुक्त-पतन की तर्ज पर जी.डी.पी. भी गिरती जा रही है. अर्थव्यवस्था का बाजा बजा हुआ है. अलबत्ता, धन्नासेठों के अरबों-खरब सुरक्षित हैं. सत्ताधारी नेताओं और नौकरशाहों की चांदी है. इसी बदरंग चांदी के जोर पर अधिकांश की संतानें अमेरिका और यूरोप में पढ़ रही हैं. रोज कुआं खोद पानी पीने वालों का न तो पहले कोई विधाता था, ना ही अब है. उनके बच्चे होश संभालते ही मजदूर बन जाते हैं, हमारे-आपके घरों में चाकरी करते हैं और फिर धीरे-धीरे न जाने कहां गायब हो जाते हैं. भीड़ में खो जाते हैं. उनसे ऊपर के वर्ग के मेधावी बालक तो अपनी जगह तराश लेते हैं, बाकी के अंग्रेजी नामों वाले छद्म स्कूलों में जाते हैं या धार्मिक संगठनों द्वारा संचालित विद्यालयों-मदरसों में, फिर सोर्स लगाकर देसी महाविद्यालयों में, जहां से वे संस्कृति और धर्म के योद्धा बनकर निकलते हैं. ये तमाम लोग यह जोड़ने की बजाय कि उनके कितने पैसे अवमूल्यन की आंच में जल गए, कितने प्रत्यक्ष करों में कटे और कितने परोक्ष में, कितने बैंक घोटालों की भेंट चढ़े, कितने धनपशुओं की कर-मुआफी में उड़े, सत्तानशीनों की ठसक पर उनकी जेबें कितनी फटीं, इन तमाम गिरहकटों की कलाकारी से उनका भविष्य कब-कब लुटा–इन सब पर बौखलाने की बजाय वे इस बात पर सनके हुए हैं कि किस मस्जिद के नीचे कौन-सा मंदिर दफन है और किसकी मां-बहन को रौंद डालने पर 'परम पुण्य' की प्राप्ति हो सकती है.

धार्मिक द्वेष की खाई को और चौड़ा किया जा रहा है. ऐसे संवैधानिक अपराधों के लिए सत्ताधारी पार्टियां, पट्टा पहने पत्रकार, एक अदद प्रीमियम पोस्टिंग और करोड़ों की चाहत रखते रीढ़विहीन अफसर और उससे भी बढ़कर हमारी डरी-गिरी या धार्मिक कार्यकर्ता से सीधे मिलॉर्ड बन बैठी विभूतियां ही पूरी तरह से जिम्मेदार हैं. मन ही मन चाहे जितना कोस लें, किंतु इससे अधिक कोई और सजा इन्हें दी भी नहीं जा सकती. और कौन देगा सजा? संविधान बनाने वाले मुख्य चेहरे बाबा साहेब आंबेडकर का नाम लेने पर ही जब संसद में लोगों की झल्लाहट रोके नहीं रुक रही कि इतनी बार ईश्वर का नाम लेते तो सात जन्मों के लिए बैकुंठ की प्राप्ति हो जाती! फिर कहने के लिए क्या बचता है! ये वही लोग हैं जो संविधान को मनुस्मृति से बदल देना चाहते हैं.

खैर, पाठकों की स्मृति में होगा कि इलाहाबाद हाई कोर्ट के प्रयागराजी जस्टिस के एक फैसले में गाय पर लिखी गई अवैज्ञानिक और कठमुल्लेपन से लबरेज टिप्पणियों पर 'हंस' के व्यंग्यात्मक संपादकीय को लेकर भक्तों ने जमकर बवाल काटा था, मुकदमे ठोके थे. आज वही जज साहब अपनी धर्मभेदी सोच पर सुप्रीम कोर्ट की फटकार झेल रहे हैं, वक्र-दृष्टि का सामना

कर रहे हैं. एक दूसरे बड़े मुंसिफ यह दावा कर रहे हैं कि इस अज्ञानी जज की बहाली पर उन्होंने भी एतराज जताया था. लेकिन नतीजा क्या है? संविधानसम्मत धर्मनिरपेक्षता और बराबरी पर न्याय देने की शपथ तोड़ने वाले ऐसे लोग अपनी जगहों पर बने रह जाते हैं और संविधान की ऐसी-तैसी करते रहते हैं. फटकार उनकी चिकनी चमड़ी से फिसलते हुए पलक झपकते काफूर हो जाती है. हमारे मुंसिफों पर भी एक आचार-संहिता जितनी जल्दी हो सके लागू होनी चाहिए. उनके टीके-त्रिपुंड, तावीज, धागे या किसी भी तरह के जाति-धर्म सूचक चिह्न धारण करने पर रोक लगनी चाहिए ताकि कम से कम उन्हें उनके 'कपड़ों' से ना 'पहचाना' जा सके. न्यायाधीशों की निष्पक्षता में भरोसा दिलाने वाला यह एक स्वागत योग्य कदम होगा.

बहरहाल, इससे यह साफ हो जाता है कि लोकतंत्र हो, संविधान हो या न्याय, ये सब लिख देने भर से स्वतः प्राप्त नहीं हो जाते. यह पदासीन लोगों की संविधान में निष्ठा, उनकी प्रज्ञा और उनके साहस पर ही निर्भर करता है कि वे कुर्सी की गरिमा को बचाने के लिए किस हद तक जोखिम मोल लेने को तैयार हैं. दूसरा रास्ता तो यही बचता है कि संविधान की रक्षा के लिए लोग अपने सुरक्षित दायरों से बाहर निकल लाठियां खाने के लिए खुद को तैयार कर लें, अन्यथा बेलगाम सत्ताधीश उन्माद फैलाते, अपने हक में संविधान की इज्जत को तार-तार करते रहेंगे.

अंतरराष्ट्रीय परिदृश्य भी इतना ही करियाया हुआ है. विडंबना है कि सीरिया में तानाशाह बन बैठे असद के कुकर्मों का चिट्ठा, गले में ग्रेनेड बांधे एके-47 लटकाए आइसिस के 'परम शांतिदूत' खोल रहे हैं. इजराइल की लोलुप निगाहें गिद्ध की तरह सीरिया की जमीन पर भी गड़ी हुई हैं. पुतिन अपने ही फैलाए जाल में बुरी तरह फंसते जा रहे हैं. उधर जेलेंस्की को मिलता ऑक्सीजन कब काट दिया जाएगा, यह ट्रम्प की मर्जी पर निर्भर करता है. ट्रम्प अचानक ही परम आदर के साथ देखे जाने लगे हैं और धीरे-धीरे उस पहुंचे हुए हकीम में बदलते जा रहे हैं, जिसके पास राजनीति के तमाम रति रोगों का इलाज है. पुतिन से लेकर अडानी जोड़े तक सब उनकी ओर टकटकी लगाकर ताक रहे हैं.

रूसी रूबल लुढ़कता जा रहा है. भारत का रुपया भी उसी से होड़ लगा रहा है. अडानी पर संदेह बना हुआ है कि वे जुर्माना भरकर जान छुड़ाएंगे, जेल जाएंगे या फिर अपने खिलाफ चल रही कार्रवाई का सम्मानजनक मुकाबला करेंगे. यह बात दीगर है कि कुछ लोगों का सम्मान से कभी रिश्ता बन ही नहीं पाता. उधर अपने देश के राजनयिकों और जेम्स बॉण्डों को समझ ही नहीं आ रहा कि चीन की आंखों में आंख डालकर देखें या कि उसकी चापलूसी करें. सुब्रह्मण्यम स्वामी द्वारा जहां-तहां छोड़े गए इशारों का अर्थ लगाएं तो लगता है मामला न सिर्फ सनसनीखेज है बल्कि चनाजोर गरम की तरह चटपटा और गर्म भी है.

इस घटिया समय से गुजरते हुए साहित्य भी अछूता नहीं रह पा रहा है. वह भी समझौतावादी बनता जा रहा है. रोटी का मक्खन वाला पहलू अनेक साहित्यकारों को लगातार बेचैन रख रहा है. धर्मनिरपेक्षता का मजाक तो खैर दशक भर से उड़ाया ही जाने लगा था. अब तो अनेक साहित्यकार यह उपदेश भी झाड़ने लगे हैं कि राजनीतिक और सामाजिक रूप से 'करेक्ट' होना बेमानी है, रचनात्मकता विरोधी है कि हमें इस बात की कतई परवाह नहीं करनी चाहिए कि हमारी कौन-सी बात अन्य समूहों को आहत करेगी. बेशक हम, यानी बहुसंख्यक समूह छोटी से छोटी बात पर बेइंतहा आहत हो सकते हैं, आहत होकर चाकू घोप सकते हैं, आगजनी कर सकते हैं, मुकदमे ठोक सकते हैं. आफ्टर ऑल, आपको बता दिया गया है कि इस देश को बहुसंख्यकों की मर्जी से ही चलना होगा!! तो मित्रों, आप जिंदा जलाए जा रहे बच्चों पर चटखारे लेकर कविता लिख सकते हैं, औरतों के बलात्कार पर ठहाके लगा सकते हैं, धू-धू जलती बस्तियों पर नीरो की तरह बांसुरी बजा सकते हैं, अल्पसंख्यकों, कमजोरों पर बेशर्मी से तलवार भांज सकते हैं क्योंकि कुछ मनीषियों की समझ से ऐसा न करना आपके पिछड़ेपन का प्रमाण होगा. अगर सच में सबके कठमुल्लेपन का विरोध करना है तो सबसे पहले बहुसंख्यकों को अपने ढकोसलों से मुक्ति पानी होगी, तभी आप अल्पसंख्यकों के ढकोसलों पर रोक लगा पाएंगे. ईश्वरीय सत्ता के छद्म से निकल एक तार्किक, वैज्ञानिक, न्यायिक, समावेशी और मानवीय समाज को जन्म दे पाएंगे.

इस वर्ष श्याम बेनेगल, मलय, कुमार शहानी, अमीन सयानी, मालती जोशी, मीना राय, एलिस मुनरो, देवेश ठाकुर, उषाकिरण ख़ान, राजेश जैन, मुनव्वर राना, उस्ताद राशिद ख़ान, वेददान सुधीर, जीवन सिंह ठाकुर, शरद पगारे, शारदा सिन्हा, ज़ाकिर हुसैन और केकी एन. दारुवाला हमसे जुदा हो गए. 'हंस' की भावभीनी श्रद्धांजलि.

पाठकों को नव वर्ष की हार्दिक मंगलकामनाएं...

अपना मोर्चा

बेहतरीन

'हंस' दिसंबर 2024 अंक. पत्रिका में हर महीने किस्म-किस्म की कहानियां प्रकाशित की जाती हैं और हम सुधी पाठकों को कई बार कुछ कहानियां अपने कथानक, शैली और सहजता से प्रभावित करती हैं.

इस मर्तबा गोविन्द मिश्र की कहानी 'बेमकसद...बामकसद' जो भारतीय पारिवारिक मूल्यों और अटूट विश्वास को बहुत संजीदगी से दर्शाती है. लेखक सिद्धहस्त कथाकार हैं और संक्षिप्त कहानी लिखकर भी ऐसी मूल्यपरक चीज हमारे समक्ष प्रस्तुत करते हैं जो विस्तारित कहानियों में भी नहीं मिल पाती है. आज के लेखकों को उनकी कहानियों से बेहतर लेखन कला सीखनी चाहिए.

भूपेंद्र सिंह

ईमेल : bhupendraksingh68@gmail.com

एक से बढ़कर एक

'हंस' नवंबर 2024 अंक की कहानियां पढ़ीं. सभी एक से बढ़कर एक हैं. फिर भी कुछ कहानियां विशेष रूप से रुचिकर लगीं. इस श्रेणी में महावीर राजी की कहानी 'एक बेढब से मासूम सपने की कहानी' सरकारी तंत्र पर तीखा प्रहार करते हुए यथार्थ से हमें रूबरू कराती है. तेजेन्द्र शर्मा की कहानी 'गोद उतराई' आज की सामाजिक पृष्ठभूमि में मानव की उलझी हुई मानसिकता को उजागर करती है. प्रमोद द्विवेदी की कहानी 'तुम्हारी दुनिया से जा रहे हैं' ने विशेष रूप से प्रभावित किया. यह कहानी कई तरह से पाठकों को सजग करती है. पहला यह कि डॉक्टर का कोई जेंडर नहीं होता और मरीजों को भी ऐसा ही मानना चाहिए. यूं तो कहानी में कॉमरेड विप्लव राज काफी संकोच करते हैं लेकिन धीरे-धीरे सहज हो जाते हैं जो उनकी प्रगतिशील विचारधारा को दर्शाता है. कैंसर जैसी बीमारी हमारे समाज में जानलेवा इसलिए भी बन जाती है कि हम उसका सही समय पर सही इलाज नहीं करवाते.

कहानी में कॉमरेड के माध्यम से यह बखूबी दिखाया गया है. तीसरा यह कि जब व्यक्ति को ऐसा लगने लगता है कि जीवन के दो चार दिन ही शेष रह गए हैं तब वह अपने जीवन काल में किए गए कर्मों का लेखा-जोखा करता है. जीवन के अंतिम क्षणों में कॉमरेड को यह महसूस होता है कि उन्होंने अपनी पहली पत्नी के साथ अन्याय किया है. चौथा यह कि बेमेल शादियां कभी भी सफल नहीं हो सकतीं. कहानी में विप्लव राज और बिट्टी देवी के साथ ऐसा ही हुआ है. यह तो बिट्टी देवी की महानता कहिए या उनके द्वारा अपने में किसी भी तरह का बदलाव नहीं लाने की प्रतिज्ञा जिसकी वजह से विप्लव राज दूसरी शादी रचा कर भी कई परेशानियों से बच जाते हैं. पांचवां यह कि कई लोग अपने सिद्धांत के इतने पक्के होते हैं कि जीवन के कठिन से कठिन हालात में भी उससे समझौता नहीं करते कॉमरेड विप्लव राज की तरह. भाषा की सुगमता, सहजता और रोचकता तो प्रमोद द्विवेदी का यूएसपी है.

कुमकुम सिन्हा, गाजियाबाद (उ.प्र.)

ईमेल : kumkum12345@gmail.com

प्रवचनात्मक संस्मरण

'हंस' दिसंबर 2024 अंक. अमेरिका की नीति और रीति की परतों को उधेड़ता संजय सहाय का संपादकीय 'कयासी संसार' कई नई और गंभीर जानकारियां प्रस्तुत करता है, पर विस्तृत ज्ञान और अध्ययन की आंच जब रोटी के एक ओर ही लगती है तो रोटी का स्वरूप और मर्म सत्य से बहुत दूर हो जाता है. रोटी को दोनों तरफ समान रूप से सेकना कोई दुरूह काम भी तो नहीं है.

'न हन्यते' में विभा रानी ने शारदा सिन्हा के व्यक्तित्व और कृतत्व को कुशलता से दिखाते हुए सच्ची श्रद्धांजलि दी है.

'मुड़-मुड़ के देख' में उषा महाजन की